★ राजनीति विज्ञान एवं इतिहास

द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व

- → ऐति० उपागम के अन्तर्गत
- → राज० संस्था, घटना, ऐति० आधार
- → अरस्तु मैकियावली, मिल, हीगल, फ्रीमैन सीले, लीकॉक, लॉर्ड एक्टन, विलोबी डेबारन (History of Phillosophy) डनिंग गेटले, वाहन, गील्क्राइस्ट।

पश्चात

- → राजनीतिक संस्कृति
- → क्रान्ति की धारणा।

संबंध नहीं
- → बार्कर

→ राज० विज्ञान व इतिहास के संबंधो को दो भागों में बांटते है →
(A) 1945 से पूर्व (B) पश्चात।

द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व अनेक राज० विचारकों ने तात्कालीन राज० व्यवस्था की व्याख्या के लिए ऐतिहासिक उपागम को अपनाया था ये किसी राज० संस्था, घटना का अध्ययन ऐतिहासिक आधार पर करते है।

फ्रीमैन → राजनीति वर्तमान का इतिहास है तो ~~तथा~~ इतिहास भूतकाल का राजनीतिक विज्ञान है।

सीले - राज० विज्ञान फल है, इतिहास जड़।

लॉर्ड एक्टन - राज० विज्ञान, इतिहास की धारा में उसी प्रकार संचित है जिस प्रकार नदी की रेत में सोने के कण।

लिकॉक - इतिहास का बहुत कुछ भाग राज० विज्ञान है।

विलोबी - इतिहास, राज० विज्ञान की तीसरी दिशा निर्धारित करती है

बर्गेस - राज० विज्ञान व इतिहास में संबंध विच्छेद किया जाएगा तो एक मृत नहीं तो लुला-लंगड़ा हो जाएगा।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात भी इतिहास से संबंधित अनेक अध्ययन हुए -

(i) राज० संस्कृति ~~की~~ अवधारणा - आमण्ड एवं वर्बा द्वारा
(ii) क्रान्ति संबंधी विश्लेषण - क्रेन ब्रिन्टन, टिली एण्ड टिली, टिली

3. वर्तमान में न्याय, समानता, स्वतंत्रता आदि मूल्यों का अध्ययन करने वाले विद्वान → उदारवादी, स्वेच्छातंत्रवादी, समतावादी।

इतिहास एवं राज. विज्ञान में संबंध नहीं – बार्कर, ईस्टन

बार्कर – राज. विज्ञान व इतिहास दोनो अलग विषय है।

ईस्टन – इतिहास मूल्यों पर आधारित है और यह राज. विज्ञान में इतिहास वादिता को बढ़ावा देता है अतः हमे वर्तमान राजनीति की व्याख्या तक सीमित रहना चाहिए।

☆ राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र →

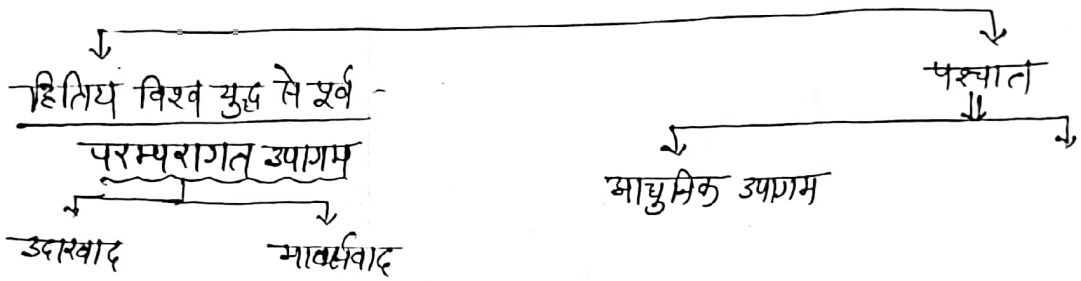

द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व – परम्परागत उपागम → उदारवाद, मार्क्सवाद

पश्चात → आधुनिक उपागम

राजनीति एवं अर्थशास्त्र दोनो घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए है। सर्वप्रथम वाणिज्यवाद (परम्परागत उदारवाद) के फलस्वरूप अनेक आर्थिक तत्वो व अवधारणाओ का प्रयोग राज. विज्ञान में किया गया। सर्वप्रथम लॉक ने नागरिक समाज की अवधारणा में सम्पति के प्राकृतिक अधिकार का समर्थन किया गया और सम्पति को राज्य की तुलना में सर्वोच्च माना। इसके बाद एडम स्मिथ, प्रिस्टले, हुकर और उपयोगितावादियो ने आर्थिक तत्वो को राज. विज्ञान में प्रयोग किया। सका. उदार. ने भी (जैसे- मिल ने state political Economy में) आर्थिक समानता को राजनीति का प्रमुख तत्व माना। मार्क्स ने अर्थव्यवस्था को राज्य की जननी माना।

व्यवहारवादी क्रान्ति एवं वैश्वीकरण के फलस्वरूप आर्थिक तत्वों का राज. प्रक्रियाओ के सन्दर्भ में भी अध्ययन किया गया। – टेल्लोकी, बकानन एन्थनी डाउन्स, शुम्पीटर इत्यादि।

नवमार्क्सवादी → हरबर्ट मारक्यूजे जैसे विद्वानों ने भौतिकवादिता पर प्रहार किया, और वर्तमान भौतिकवादी युग में मानव की स्वतंत्रता सीमित हो चुकी है। One dimensial Man

हेबरमॉस ने कहा कि पूंजीवाद के कारण नागरिक समाज में व्यक्ति की स्वतंत्रता नष्ट हो चुकी है।

निकोलस - आर्थिक समाजवाद में भी व्यक्ति की स्वतंत्रता नष्ट हो चुकी है।

उत्तरवैश्विक दृष्टिकोण → क्वामे नक्रुमा, हमजा अल्वी, चे ग्वेवारा, जूलियस नरेरे महाथिर मोहम्मद के अनुसार वर्तमान वैश्वी. युग में उत्तरवैश्विक दृष्टिकोण ने नव उपनिवेशवाद को जन्म दिया है।

केन्द्र परिधि मॉडल - आन्द्रे फ्रेंक, समीर अमीन, वालरस्टीन आदि विद्वानों ने दिया था। विकसित देश केन्द्र एवं विकासशील देश परिधी है। धन का प्रवाह परिधी से केन्द्र की ओर हो रहा है।

प्रकार्यवादी सिद्धान्त - वैश्वीकरण का समर्थन करता है, व्हो. आर्थिक संगठनों का समर्थन करता है, अर्थ को राज. विज्ञान — डेविड मित्रेणी, फॉग, नाई, मेण्डलोविच, स्टीमन लैमी, प्रेचर।

कथन

चार्ल्स बेयर्ड → अर्थशास्त्र के बिना राज. विज्ञान सारहीन है।

एसलिंगर - राज. विज्ञान के विषय में अर्थशास्त्र को सम्मिलित कर लेना चाहिए।

* अर्थशास्त्र एवं राज. विज्ञान भिन्न विषय है - आइवर ब्राउन

अर्थशास्त्र भौतिकवादी है राज. विज्ञान नैतिकवादी है। - ब्राउन

राज॰ विज्ञान एवं समाजशास्त्र :→

राज॰ विज्ञान में प्रारम्भ से ही समाज का अध्ययन किया जा रहा है, सर्वप्रथम अरस्तु ने मनुष्य को सामा॰ प्राणी माना था इसके बाद लॉक ने राज्य को समाज से अलग किया था। कान्ट, ग्रीन आदि विचारक भी राज्य की तुलना में समाज पर बल देते है।

रूढ़ीवादी विचारक ह्यूम, बर्क आदि भी समाजशास्त्र के तत्वो को राज॰ विज्ञान में महत्वपूर्ण मानते है। रिति रिवाजो के प्रभावो को राजनिति का आवश्यक अंग मानते है। आधुनिक राज॰ विचारक लास्की, मैकारवर ने भी स्वीकार किया था कि रिति रिवाज सम्प्रभुता को सीमित करते है।

नागरिक समाज पर बल देने वाले नवमार्क्सवादी विचारक अधिरचना के भाग नागरिक समाज पर बल देते है जैसे - धर्म, रिति रिवाज, संस्थाओ को सम्मिलित करते है। ग्राम्शी लुई अल्थुजीयर, फ्रॉज फैनन, हम्जा अल्वी आदि प्रमुख है।

ज्ञान शक्ति का स्रोत है

राज॰ विज्ञान में शक्तिवादी दृष्टिकोण - केटलिन, लास्वेल, फुको, बेकर आदि विद्वान समाज को शक्ति पर आधारित संस्था मानते है। ये सभी समाजशास्त्र से जुड़े हुए है।

फूको - Truth and power में लिखते है कि सामाजिक व्यवहारिक ज्ञान शक्ति का महत्वपूर्ण स्रोत है।

रेरजन हापर → राज्य अपने विकास की प्रारम्भिक चरणो में एक सामा. संस्था ही था।

केटलिन - राज. विज्ञान एवं समाजशास्त्र जुड़े है और एक ही तस्वीर के दो पहलु है।